तत्त्वार्थसूत्र षष्ठम अध्याय

मोक्ष मार्गस्य नेतारं ,भेत्तारं कर्मभू भृताम्।

ज्ञातारं विश्वतत्त्वानां ,वन्दे तद्गुण लब्धये।

Class 10

तत्त्वार्थसूत्र ग्रन्थराज में षष्ठम अध्याय के माध्यम से आस्रव तत्व का विवेचन किया जा रहा है। कर्मों के आस्रव किन-किन कारणों से होते हैं, यह प्रकरण अब प्रारंभ होता है। मूल में आठ प्रकार के कर्म है और प्रत्येक कर्म के लिए कुछ विशेष विशेष भाग होते हैं। विशेष-विशेष आस्रव के लिए निमित्त भूत परिणाम होते हैं। उन परिणामों का कथन करने के लिए यह प्रकरण प्रारंभ होता है कि जो ज्ञानावरण कर्म है, दर्शनावरण कर्म है, जिनके माध्यम से हमारे आत्मा के ही अपने ज्ञान गुण के ऊपर आवरण आता है। हमारी आत्मा का जो दृष्टापन का स्वभाव है, दर्शन गुण है, उसके ही ऊपर जो कर्म आवृत हो करके बाधा पहुँचाते हैं। वह हमारे ही भावों से बंधे हुए कर्म होते हैं और उन कर्मों में विशेष रूप से आस्रव किन-किन भावों से होता है, किन किन परिणामों से होता है, यह बताने के लिए यह सूत्र आगे आ रहा है।

तत्प्रदोष-निह्नव-मात्सर्यान्तरायासादनोपघाता ज्ञान-दर्शना-वरणयो:।।**6.10**।।

ज्ञानावरण और दर्शनावरण इन दोनों ही कर्मों के आस्रव के लिए यह कारण बताए गए हैं। सबसे पहले इसमें कारण बताया है- प्रदोष भाव।

1 प्रदोष भाव यानि द्वेष भाव

प्रदोष का मतलब होता है - द्वेष भाव। जब कोई व्यक्ति सम्यग्ज्ञान ज्ञान की बात कर रहा हो तो उस समय पर भी हमारे मन में उसको देखकर के द्वेष भाव उत्पन्न हो सकता है क्योंकि द्वेष भाव, हमारा भाव है। ज्ञान देना, ज्ञान की बात करना यह उसका भाव है। हम अपनी आदत के अनुसार किसी भी व्यक्ति की प्रशंसा होते हुए देखकर के किसी भी व्यक्ति की बढ़ती हुई देखकर के हम उससे द्वेष रख सकते हैं। क्योंकि द्वेष हमारे अन्दर उत्पन्न होने वाला एक सहज परिणाम है। इस तरह का जब कोई भी द्वेष भाव उत्पन्न होता है, जिसमें कि हम कहेंगे तो कुछ नहीं लेकिन मन ही मन में एक चुप्पी साध लेते हैं और हम उससे द्वेष, होने के कारण से उसके बारे में कुछ अच्छा नहीं कहते या उसकी प्रशंसा के भाव नहीं लाते और भीतर ही भीतर एक कुढ़न रखते हुए उसके ज्ञान के प्रति हम एक अपने ही मन में अनादर लाते हैं। यह प्रद्वेष भाव के माध्यम से होता है। चूँकि यह ज्ञानावरण कर्म के आस्रव का प्रमुख कारण है इसलिए इस भाव से ज्ञानावरण कर्म का ही मुख्य रूप से बंध होगा। इसका जो object है वह ज्ञान ही है ज्ञान के विषय में ही किया जा रहा है। इसलिए इससे ज्ञानावरण कर्म का बंध होगा। द्वेष भाव किसी को किसी से भी हो सकता है। सहजता में भी होता है और वह जिस निमित्त से होता है उन निमित्त से सबसे

ज्ञानावरण कर्म का बंध हो, ऐसा नहीं कहा जा रहा लेकिन अगर किसी के ज्ञान को देखकर के हमें द्वेष भाव होता है तो ज्ञानावरण कर्म का बंध होता है।

द्वेष भाव के कारण से उत्पन्न होने वाला मौन भी कर्म बंध का कारण है

किसी का ज्ञान कोई बहुत अच्छा बताता है या कुछ बखान करता है किसी भी तरह के अच्छा explanation करता है और उसकी प्रशंसा को सुनकर के या उसके व्याख्यान सुन कर के हम भीतर ही भीतर मन में ईर्ष्यावश या द्वेषवश हम चुप्पी साध लेते हैं। उसके लिए हम मौन हो जाते हैं या हम उसके बारे में कुछ भी कहना पसंद नहीं करते हैं तो यह भी मन का एक भाव प्रदोष भाव कहलाता है। आप देखेंगे अधिकतर व्यक्ति जब किसी के प्रति ईर्ष्यालु होते हैं, घृणा भाव में होते हैं तो वह किसी की प्रशंसा सुनकर के या किसी की अच्छी बात सुनकर के मौन हो जाते हैं। क्योंकि एक सभ्यता के नाते उन्हें कुछ कहना तो उचित नहीं लगता तो मौन साध लेते हैं लेकिन भीतर से उनके मन में उनके प्रति द्वेष भाव रहता है। इस तरह का भी कोई जो चुप्पी साधने का मौन भाव धारण करने का भाव आता है ज्ञानावरण कर्म के बंध का कारण होता है। यह हर उस व्यक्ति को समझने और ध्यान रखने योग्य है, जो ज्ञान के साथ कर रहा है, ज्ञान का आचरण कर रहा है या ज्ञान का अर्जन कर रहा है, वह चाहे लौकिक क्षेत्र में हो चाहे वह अलौकिक क्षेत्र में हो। लौकिक क्षेत्र में भी स्कूलों में, कॉलेजों में, students के अन्दर यह प्रवृत्ति मिलेगी। जो अलौकिक क्षेत्र में भी शास्त्रों का व्याख्यान करते हैं, ज्ञान का प्रकाशन करते हैं, किसी भी तरह से अपने सम्यग्ज्ञान के माध्यम से लोगों को ज्ञान देते हैं, उनके प्रति भी लोग विद्वेष भाव धारण कर सकते हैं और इसी कारण से यह ज्ञान का क्षेत्र लौकिक और अलौकिक दोनों रूपों में व्यापकता के साथ में चलता है।

द्वेष भाव को हम प्रशंसा में बदले

और ज्ञान के साथ यदि इस तरह का प्रद्वेष भाव आता है, तो उसे आचार्य कहते हैं- कि यह मुख्य रूप से उस व्यक्ति के लिए ज्ञानावरण कर्म के बंध का कारण बन रहा है या भीतर ही भीतर जो भाव हो रहा है, हम कह तो किसी से कुछ नहीं रहे लेकिन फिर भी कर्म का बंध तो आप के भावों से होगा। आपसे कुछ कहे या न कहे, द्वेष नहीं होना चाहिए। एक सामान्यतः अगर कोई अच्छा कर रहा है, सम्यग्ज्ञान की बात है तो हमारे अन्दर भीतर से अच्छा भाव आना चाहिए, प्रशंसा का भाव होना चाहिए। चलो! कोई बात नहीं किसी न किसी तरह से जिनशासन की प्रभावना हो रही है। इस तरह का भाव आना तो एक अच्छा भाव है और अगर हमारी भीतर उसके प्रति कोई भी द्वेष का भाव आता है तो वह ज्ञानावरण कर्म का बंध करा देता है।

जिनको इससे डर लगे वह अपने को उस भाव से बचा पाते हैं अब आपको कभी देखने में आता होगा कि किन्हीं लोगों को ज्ञान कम होता है या पहले ज्ञान अच्छा था बाद में कम हो गया अथवा जिनको ऐसा डर लगे कि हमारे ऊपर कोई और ज्ञानावरण का बंध ना हो जाए , ज्ञानावरण कर्म हमको और बाधा न पहुंचाए तो हमारा ज्ञान अगर किसी भी तरह से आवरित होगा तो वह हमारे अपने इन भावों के माध्यम से होगा और यह भाव ऐसे हैं जो सब को पकड़ में आ सकते हैं। स्थूल रूप से जो हमारे अन्दर उत्पन्न होने वाले परिणाम हैं वह यहां बताया जा रहे हैं ।

ज्ञान को बनाए रखने का प्रकरण

तो द्वेष भाव सब के पकड़ में आता है। द्वेष भाव के कारण से उत्पन्न होने वाला मौन भी सब कुछ समझ आता है तो इसको हम अपनी प्रशंसा में बदलें। यह हमारा अपना ही पुरुषार्थ होगा अन्यथा यह ज्ञानावरण कर्म का बंध हमारे लिए जो आज हमारे पास ज्ञान है उसमें भी भविष्य में कमी लाएगा और इस कर्म के फल से फिर हमें इस तरह की ज्ञान की प्राप्ति नहीं होगी जिसको देखकर के कि हम ईर्ष्यालु हो रहे हैं या जिसको देखकर के कि हम द्वेष भाव कर रहे हैं। यह बहुत अच्छा प्रकरण है उन सब लोगों के लिए जो अपने ज्ञान को बनाए रखना चाहते हैं। हमारे ज्ञान पर किसी भी तरह का कभी भी आवरण ऐसा न आ जाए कि मुझे कुछ भी याद न रहे, मैं सब कुछ भूल जाऊँ, मेरा ज्ञान का क्षयोपशम मिट न जाए। वह हमारे अन्दर जो कर्म का उदय आता है, वह बहुत कुछ इन्हीं भावों से किया हुआ पहले का बंधा हुआ कर्म होता है। इसलिए आचार्य कह रहे हैं प्रदोष भाव ज्ञानावरण और दर्शनावरण दोनों के आस्रव के बंध का कारण है। ज्ञान के विषय में होंगे यही भाव तो ज्ञानावरण कर्म का विशेष रूप से बंध कराएँगे और दर्शन के विषय में होंगे वे दर्शनावरण कर्म का विशेष रूप से बंध कराएँगे।

दर्शनावरण कर्म के बंध का कारण

मान लो दर्शन के विषय में कैसे? कोई भी व्यक्ति कोई भी अच्छा दर्शन करना चाहता है। जिन दर्शन है, गुरु दर्शन है या कुछ किन्हीं-किन्हीं को इसी बात से द्वेष आ सकता है कि आप उनके दर्शन करने क्यों जाते हो? आप उनके दर्शन करके क्या प्राप्त कर लेते हो? आप वहाँ दर्शन करने ही बार-बार क्यों जा रहे हो? समझ आ रहा है? आदमी के अन्दर द्वेष भाव किसी भी निमित्त से हो सकता है। अगर वह इस तरह से वीतराग जिनेंद्र देव गुरु के निमित्त से होता है और उसके दर्शन के प्रति भी वह द्वेष भाव कर लेता है जैसा कि अक्सर घरों में भी देखा जाता है कोई व्यक्ति अगर किसी के दर्शन करने भी ज्यादा जाता है या बार-बार जाता है तो घर के अन्य सदस्य उसके प्रति एक द्वेष भाव धारण कर लेते हैं। नहीं होता? होता तो है। इसी को यहाँ पर कहा जाएगा दर्शनावरणीय कर्म का बंध आप खुद कर रहे हैं। अब यह बहुत सावधानी की बात है कि जिस समय पर तो हम कर्म का बंध करते हैं उस समय पर तो हम ध्यान देते नहीं और फिर बाद में जब हमारे लिए ही कर्मों का ऐसा उदय आ जाता है कि हम ही दर्शन करने नहीं जा पा रहे

या इस तरह के रोगी हो गए, अपाहिज हो गए कि हम अब दर्शन प्राप्त नहीं कर पा रहे तो यह हमारे लिए ही दुखद हो जाता है। तब हमें याद आता है कि हमने ऐसा कौन सा कर्म का बंध कर लिया कि हम दर्शन भी नहीं कर पाते हैं। ध्यान रखें कि कोई भी व्यक्ति जो अपने ज्ञान के साधनों का किसी भी तरीके से प्रयोग कर रहा है और दर्शन के साधनों का भी जो प्रयोग कर रहा है या उनको अपना रहा है, उसके प्रति हमारे मन में प्रद्वेष भाव नहीं होना चाहिए और उसके प्रति इस तरह का द्वेष नहीं होना चाहिए। जिससे कि हम उसके कार्य से प्रशंसा को भीतर से प्राप्त न हो और हम भीतर ही भीतर उससे मौन साध ले, चुप्पी साध ले, उससे बोले न और घृणा के कारण से हम उसकी भीतर ही भीतर जो है निंदा भी करें। इस तरह का जो भाव है यह हमारे लिए विशेष रूप से ज्ञानावरण दर्शनावरण कर्म के बंध का कारण बन जाता है। ज्ञान के विषय में होगा प्रदोष भाव तो ज्ञानावरण कर्म का बंध कराएगा और दर्शन के विषय में होगा तो यह दर्शनावरण कर्म का बंध कराएगा।

इसी तरह से आचार्य कहते हैं कि द्वेष और जब आगे बढ़ता है तो फिर शुरुआत तो कषाय से ही होती है। अब वो कषाय बढ़ती हुई कैसे आगे आगे जा सकती है? द्वेष से चीज शुरू हुई , द्वेष अपने तक रहा तब तो अपन चुप रहे, मौन रहे लेकिन फिर भी द्वेष तो था। उससे भी कर्म का बंध होता है।

निह्नव भाव से बचें

वही चीज आगे दूसरा factor है- निह्नव। निह्नव का मतलब होता है- छुपाना। छुपाने का sense यह है कि जैसे आपके पास में ज्ञान है और आप उस बारे में जानते हैं लेकिन आप से कोई जब दूसरा पूछता है तो आप इसलिए नहीं बताते हैं कि इसको भी बता देने से यह जो है इसके लिए यह ज्ञान हो जाएगा। इसको भी जब यह ज्ञान हो जाएगा तो फिर जो है हमारे लिए उसकी कोई उपयोगिता नहीं होगी। इस भावना के साथ मना कर देना या छुपाना या नहीं बताना ताकि इसको वह ज्ञान की प्राप्ति न हो जाए और वह भी वैसा ही न करें जैसा मैं कर रहा हूँ। यह कहलाता है- निह्नव। ज्ञान में सब चीजें आ जाती है। ज्ञान के साधन, ज्ञान को प्रदान करने वाले गुरु, किसी का भी ज्ञान जिन शास्त्रों से प्राप्त होता है वह, अगर कोई भी चीज हमारे लिए इस तरह से छिपाने में आती है तो वह भी उस निह्नव भाव में आ जाती है। आचार्य कहते हैं कि जिन्हें ज्ञानावरण कर्म के बंध से डरना है, वह निह्नव से बचे और निह्नव से बचने के लिए यह भी होता है कि जैसे मान लो कहीं किसी व्यक्ति ने कोई हिंसा की और वहाँ पर और भी लोग बैठे थे और उन्हें पूछा कि भाई हिंसा करने से कुछ होता है क्या? अब तो निह्नव कई तरीके से होता है। आपको पता है कि हिंसा पाप है, आपको पता है कि हिंसा करने से दूसरों को दुःख पहुँचता है। लेकिन आपने इसलिए नहीं बताया कि अगर हम इसको हिंसा को पाप बता देंगे तो जो यह हिंसा कर रहा है वह करना छोड़ देगा। निह्नव का यह भी रूप है और हिंसा छोड़ देगा इससे हमारा कोई जो संबंध है या हमारा इससे जो जुड़ाव है वह नहीं रहेगा या अगर यह हिंसा छोड़ देगा तो यह हमारे लिए जो अभी सहयोग कर रहा है,

वह नहीं कर पाएगा। क्योंकि मान लो अगर कोई ऐसा व्यापार कर रहा है जिसमें आपका सहयोग कर रहा है उस व्यापार के profit से आपसे पूछा उसने क्या यह हिंसा करने से पाप का बंध होता है? आपको पता था कि पाप का ही बंध होता है। लेकिन आपने छुपाया, इसलिए छुपाया कि ताकि वह हिंसा को छोड़ न दे। हिंसा को छोड़ेगा तो भी वह हमारे लिए कहीं कमी न हो जाए। इस बात से भी हम उसको ही सही ज्ञान नहीं दे रहे हैं या नहीं बता रहे हैं। नहीं! नहीं! कुछ नहीं होता, चलता है ऐसा कह देना भी निह्नव में आता है। समझ आ रहा है? यह भी इसका दूसरा रूप है। आपको ज्ञान है हिंसा पाप है, हिंसा से उसको भी कर्म का बंध हो रहा है। लेकिन हम उसको इसलिए नहीं छुडाना चाहते कि उससे पैसा आ रहा है।

मान लो घर की महिलाएँ हैं। पति कोई ऐसा काम कर रहा है जिससे कि गलत ढंग से हो पैसा अर्जित कर रहा है। पत्नी को ज्ञान है कि यह गलत कार्य करके पैसा ला रहा है लेकिन पत्नी उसको रोकती नहीं क्योंकि रोकेगी तो घर का खर्च कैसे चलेगा? यह standard बना हुआ है तो कैसे बनेगा? उसको यूँ नही कहती इससे पाप का बंध होता है या इससे जो है आपको दुःख पहुँचेगा। यह जो है आपके लिए बहुत बड़ा अशुभ आयु के बंध का कारण बनेगा। ऐसा कुछ नहीं कहती और जानती सब है और पति को कुछ पता नहीं है और पति अगर पूछता है तो चुप हो जाती है, ताकि यह उसको छोड़ न दें। यह होता है आप देखेंगे। जानबूझकर के जब बच्चे पूछते हैं आपसे कि पापा या मम्मी कि हम यह चीज खा ले कि नहीं खा ले? कई बार बच्चे पूछते हैं बाजार की चीज है या कोई भी चीज है वह पूछ रहे हैं तो आपको पता होता है यह खाने योग्य नहीं है। लेकिन आप इसलिए यह नहीं खाएगा तो मैं भी नहीं खा पाऊँगा तो उसके लिए भी आप कहते हैं- नहीं! बेटा कुछ नहीं होता खा ले, खा ले। यह बहुत होता है। यह हम जो छुपाते हैं, यह अपने ज्ञानावरण कर्म का बंध करते हैं। बच्चे इतने समझदार होते हैं उन्हें जब कोई दूसरा बच्चा देखते हुए मिलता है, कहता है यह पटाखा नहीं चला रहा है। बच्चे ने अपने पापा से कहा हम पटाखा नहीं चलाएँगे। पापा कहते हैं- पटाखे में क्या हो रहा है? क्या बुराई है? यह दुनिया चला रही है, तू क्यों नहीं चलाएगा? तू क्यों नहीं जलाएगा? पापा को पता है कि यह हिंसा का काम है लेकिन फिर भी उन्हें भी करना है बच्चों को भी कराना है और इसलिए कराना है ताकि बच्चे सब कुछ करें छोड़े नहीं, छोड़ न दे कुछ भी, इसलिए भी हम उससे सही बात जो नहीं बता रहे हैं उसको छुपा रहे हैं, यह भी निह्नव में आता है। यह भी ज्ञानावरण कर्म के बंध का कारण बनता है और यह सब करते हैं। जहाँ हमारा स्वार्थ छुपा होता है वह हम सब तरह से ज्ञान का निह्नव कर लेते हैं। इस निह्नव को इस रूप में लगाना, ज्यादातर लोग सिर्फ कॉपी किताब और उसी तक समझते हैं या निह्नव का मतलब है गुरु का नाम छुपाना। बस! इसका इसका अपनी practical life में इतना उपयोग है कि इसी निह्नव के कारण से हम सामने वाले को नहीं बताते कि यह अभक्ष्य पदार्थ है। इसको नहीं खाना चाहिए क्योंकि उन्हें पता होता है कि अगर हम मना करेंगे कोई चीज घर में आना बंद हो जाएगी या यह नहीं खाएगा तो हम भी नहीं खा पाए।

Class 11

अधिकतर लोग आलू सिर्फ इसलिए खा रहे होते हैं कि उन्हें बच्चों का बहाना लेना होता है। बच्चे खाएँगे आलू प्याज हम भी खाते रहेंगे और बच्चे जिस दिन बंद कर देंगे तो फिर हम खाएँगे तो हमें शर्म आएगी। हम इतने बड़े होकर के आलू प्याज खा रहे हैं और बच्चे ने खाना बंद कर दिया इसलिए बड़े जानबूझकर के भी उसे ज्ञान नहीं देते। बल्कि कहते हैं कि बेटा आलू प्याज में कोई दोष कुछ नहीं यह भी वनस्पति, वह भी वनस्पति। यह एक निह्नव का रूप जो मैं आपको बता रहा हूँ इसे समझो आप। जो आपने सामान्य तरीके से समझ रखा है निह्नव उससे भी बढ़कर के इसका उपयोग इस रूप में करो। यह निह्नव अगर रुकेगा तभी जो है हमारे अन्दर ज्ञानावरण कर्म का बंध रुकेगा। हम अपने ज्ञान को उपयोग में नहीं ला रहे हम उस ज्ञान को ही जो है आवरण डालकर उसका बंध कर रहा है छुपा करके। इस तरह से छुपाने का नाम निह्नव कहलाता है।

मात्सर्य भाव

एक आ जाता है- मात्सर्य भाव। मात्सर्य भाव मतलब ईर्ष्या भाव। जिसके माध्यम से हम यह उसके प्रति भाव रखने लग जाते हैं कि अगर मैंने इसको ज्ञान दे दिया तो यह भी हमारे जैसा ज्ञानी हो जाएगा तो फिर हमें पूछेगा कौन? जो लोग अभी हमसे पूछ रहे हैं वह फिर इसी से पूछने लगेंगे तो फिर हमारी कीमत कैसे होगी? इस तरीके का भाव आने के कारण से सामने वाले के प्रति एक मत्सर्ता का भाव रखना, ईर्ष्या का भाव रखना उसे ज्ञान नहीं देना और ज्ञान होते हुए भी जो है उसे उसके योग्य नहीं समझना यह जो है मात्सर्य भाव के कारण से होता है। यह मात्सर्य भाव भी चला करता है। जिसे हम जलन कहते हैं और यह लौकिक क्षेत्र में भी चला करती है। जो पढ़ने वाले बच्चे उनके अन्दर भी इस तरह से चला करता है। जो बड़े हैं उनमें बड़े के तरीके से चला करता है। क्योंकि भाव जो भीतर कषाय के कारण से पैदा हो रहा है, वह चलता ही रहता है। वह मात्सर्य भाव आने पर हम किसी की कोई भी जो चीजें हैं वह भी हम उसके लिए जो मात्सर्य के कारण से नहीं बताते हैं कि इस को इससे फायदा हो जाएगा या इस चीज को एक ज्ञान पैदा हो जाएगा हम उसको मात्सर्य भाव के कारण से नहीं बता रहे हैं। मात्सर्य भाव में यह ध्यान रखना पड़ता है कि कहीं इसलिए तो नहीं बता रहे हैं कि यह भी जो है हमारे जैसा नाम पा जाए, प्रशंसा पा जाए, बड़ाई पा जाए, इसको इस कारण से हम इसको नहीं बता रहे हैं। यह जो है मात्सर्य भाव में आने वाला भाव हो जाता है और ऐसा होता है। आप देखेंगे बड़े-बड़े वकील जज सिर्फ इसी अहम पर जीते हैं कि उन्हें अगर कोई knowledge है तो वह जानते हैं कि हमें knowledge है और मान लो उन्हें कोई point मिल गया कोई clue मिल गया या किसी भी तरीके की problem का solution जानते हैं तो वह पता है कि यह solution हमारे पास है तो उसको सहज नहीं बताएँगे उससे अच्छा खासा पैसा वसूल करेंगे। तब उसको बताएँगे। बात छोटी सी होती है लेकिन हम उसको इस तरीके से सामने ले आते हैं कि जो हमारे पास है वह

किसी दूसरे के पास न पहुँच जाए। हमारा ज्ञान दूसरे के पास में न पहुँच जाए या जिस तरीके से हम कोई भी ज्ञान अर्जित कर रहे हैं। वह सब वह भी न करने लगे जिन साधनों से हम कर रहे हैं, उन्हीं साधनों से वह भी न करने लगे। ऐसी उसको नहीं बताना मात्सर्य भाव के कारण से होता है। यह तो कह देंगे हाँ! ठीक है तू भी पढ़ ले बहुत सारी law की किताब है। किसी में से तुमने पढ़ा उसमें से मैंने पढ़ा होगा। इसी में पढ़ लो, तुम भी पढ़ लो। लेकिन किस में क्या? किस संविधान के तहत? किस धारा के तहत? क्या हो रहा है? उसको जैसा मालूम है इसलिए उसको नहीं बताता। यह अगर उसको भी पता पड़ जाएगा तो मेरे सारे client उसके पास में चले जाएँगे। एक के लिए नहीं सब के लिए होता है। doctor को doctor से होता है, teacher को teacher से होता है, lawyer को Lawyer से होता है। student को student से होता, सब को सबसे होता है। यह मात्सर्य भाव के कारण से भी ज्ञानावरण कर्म का बंध होता है। जिसे भीतर से कह सकते आप jealousy का परिणाम और जब यह बढ़ जाता है तो फिर आगे आता है- अंतराय।

अंतराय कर्म

यह बढ़ रहा है, प्रदोष था पहले चुपचाप भीतर ही भीतर चल रहा था। निह्नव हो गया थोड़ा सा बोल दिया। हमें नहीं मालूम, हम नहीं जानते यहाँ तक रहा। फिर जो है उससे भी बढ़कर के मात्सर्य भाव आ गया तो हम जानते हुए भी उसको बता नहीं रहे हैं फिर उससे भी बढ़कर के और ज्यादा तीव्र कषाय बढ़ गई या भाव और बढ़ गया तो अंतराय के रुप में बदल गया। अंतराय मतलब अब इसके काम में विघ्न डालना। कौन से काम में? जिन साधनो से ज्ञान अर्जित कर रहा है, जिससे ज्ञानी बनता जा रहा है। कौन सी किताब पढ़ता है? कौन सी tution लगाता है? इसको वहाँ नहीं जाने देना क्योंकि अगर यह भी वही तैयारी करेगा तो फिर यह भी जो है मेरा बच्चा भी I.I.T. पढ़ रहा है और उसका बच्चा भी पढ़ रहा है और यह भी उसी teacher से पढ़ रहा है, मेरा भी उसी teacher से पढ़ रहा है। ऐसा पढ़ेगा उन्हीं किताबों से तो फिर यह बराबर का हो जाएगा। इसके नंबर ज्यादा आएँगे, मेरा बच्चा पीछे रह जाएगा तो यह अंतराय डालने की कोशिश करना। किताबें अलग कर देना, साधन अलग कर देना इस तरह के अंतराय जो हम बीच-बीच में डाल देते हैं ताकि वह पढ़ न पाए, ज्ञान अर्जित न कर पाए। यह भी जो है तरह-तरह के साधन होते हैं जैसे मान लो बच्चे का पढ़ने का time हुआ और उसी समय पर कोई उसका दोस्त जो जानता है कि इस time पर पढ़ता है, उसी time पर वह उसको खेलने के लिए बुला ले जाता है। सिर्फ इसलिए कि पढ़ न पाए क्योंकि उसे पता है इसी time पर पढ़ता है, बाद में तो सोएगा। इस तरह से जो एक दूसरे के ज्ञान के साधनों में विघ्न डाला जाता है वह अंतराय के रूप में सामने आता है। यह अंतराय अब आगे चल कर के अपने को इसी रूप में मिलेगा इसको बोलते हैं- 'जैसा करोगे वैसा पाओगे' हम इस तरह का भाव कर रहे हैं। आज हम अंतराय डाल रहे किसी के ज्ञान में तो कल कोई हम जब ज्ञान अर्जित कर रहे होंगे हमारे ज्ञान के साधन सामने होंगे तो उन में विघ्न आएगा तो कहाँ से आएगा? वह हमारे अपने ही कर्मों के फल से आएगा। किसी भी तरह की कोई भी प्रवृत्ति करना जिससे कि वह ज्ञान या दर्शन के साधनों से वंचित हो

जाए ऐसा प्रयास करना। ज्ञान और दर्शन दोनों के साथ लगाना। ज्ञान के साथ ज्ञानावरण कर्म का विशेष रूप से आस्रव होता है, तो दर्शन के साधनों में दर्शनावरणकर्म का विशेष रूप से आस्रव होगा। अंतराय में इस तरीके से किसी के लिए विघ्न डालना ताकि वह कहीं, जैसे जिन दर्शन करने जा रहा है, गुरु दर्शन करने जा रहा है, नहीं जा पाए। मात्सर्य भाव के कारण से हम यह अंतराय भी उसके अंदर डालने लग जाते। उसी समय घर की सासू काम बताएगी जिस समय मंदिर जाने का बहू का time होता है। ताकि मंदिर न जाए, उसी समय काम बताएगी। यह काम करना है तब जाना है और जब वह काम कर लेगी फिर जाने को तैयार हुई अभी यह काम और था। यह द्वेष होता है। आजकल तो बहुत ज्यादा मिल रहा है। पढ़े-लिखे लोगों के साथ आजकल यह बहुत ज्यादा हो रहा है। पहले लगता था कि यह कम होता था। आजकल घर-घर में एक दूसरे को लोग अगर रोक रहे हैं तो धर्म कार्य से रोक रहे हैं। अधर्म करने से नहीं रोक रहे हैं। आप देखेंगे कोई भी बच्चा हो, बड़ा हो कोई भी बेटी अगर किसी के घर बहू बनकर आई हो, संस्कारित हो तो उसको प्रताड़ना मिलती है, इसी अज्ञानता के कारण से। तू यहाँ धर्म मत कर और अगर वह धर्म करने में रुचि लेती है तो उसको रोका जाता है। तरह-तरह से अंतराय डाले जाते हैं। यह जो ज्ञान का बंध हो रहा है, दर्शन का बंध हो रहा है, यह पढ़े-लिखे लोग ज्यादा करते हैं। अनपढ़ क्या करेगा? जो किसी से कोई मतलब ही नहीं रखता है। अनपढ़ तो अपने पहले किये गए कर्म को भोग रहा है। अभी जो ज्ञान दिशा में है वह ज्ञानावरणीय कर्म और दर्शनावरणीय कर्म का ज्यादा बंध कर रहे होते हैं। ऐसे-ऐसे भी लोग होते हैं। किन्हीं घरों में कोई बच्चे हैं, मुनि महाराज के दर्शन करने जा रहे हैं। बड़े रोक देते हैं दर्शन करने नहीं जाना। क्यों नहीं जाना? मुनि महाराज होते नहीं है। अब उन्हें नहीं आना तो बच्चों को भी रोक देना, बहुओं को रोक देना उन्हीं को नियम दिला देते हैं। नहीं! मुनि महाराज के दर्शन करने नहीं जाना, स्वाध्याय में नहीं जाना। मेरे पास बैठा करो मैं सिखाऊँगा, मेरे पास बैठो मैं बताऊँगा। रोक दिया! यह क्या हुआ? यह दर्शनावरणीय कर्म का बंध हो रहा है। आपको भविष्य में कभी मुनि महाराज के दर्शन मिल कर के भी नहीं मिलेंगे। इस तरह से हो रहा है बहुत अच्छे ढंग से हो रहा है। पढ़े-लिखे लोग ज्यादा कर रहे हैं इस बात पर आप ध्यान दें। अच्छे जो literate person है, अपने आप को बहुत ही civilized कहते है। जो बड़े-बड़े degree holders हैं, उन्हीं के साथ ऐसे notions आते हैं और इन्हीं के कारण यह ज्ञानावरण, दर्शनावरण कर्म और अंतराय भी पढ़े-लिखे लोग दूसरों के सामने पैदा करते हैं। विघ्न डालते रहते हैं। वह कोई ज्ञान की किताबें पढ़ रहा है तो कहेंगे क्या तू हमेशा धर्म की किताब पढ़ रहा है? क्या तुम हमेशा महाराज के प्रवचन सुनते रहता है और कोई काम नहीं है क्या? अगर वह कर रहा है फिर तो मना है और फिल्में देख रहा है फिर तो ठीक है। डर क्या है? बच्चा कहीं धार्मिक न हो जाए, बच्चे को कहीं सम्यग्ज्ञान न हो जाए क्योंकि हमें नहीं है तो उसे भी नहीं होना चाहिए। आज सबसे ज्यादा पढ़े-लिखे लोग अपने बच्चों को सही मार्ग पर जाने से रोक रहे हैं। हम कहते हैं कि जो यह नई पीढ़ी है वह धर्म के प्रति संस्कारित नहीं है। वह इसलिए नहीं है क्योंकि इससे पहले वाली पीढ़ी जो है वह अंहकारी हो रही है। इतनी ज्यादा उनके अंदर कषाय आ रही है कि वह खुद नहीं कर रहे हैं और दूसरों को भी नहीं करने दे रहे हैं। यह

सबसे ज्यादा हो रहा है। आखिर आपको सोचना चाहिए कि सामने वाला व्यक्ति उसका अपना भाव है। अगर उसके अपने पुण्य कर्म के उदय से कोई धर्म क्षेत्र काल की अनुकूलता उसको मिल रही है, उसके भाव कुछ ज्ञान दर्शन के हो रहे हैं तो हम उसको क्यों रोके? थोड़ा उसको अपनी रुचि से करने दो, कोई गलत तो नहीं कर रहा। फिल्में देखने जाए, खूब दिन भर mobile देखता रहे तो आपको रोकने का भाव नहीं आता। कोई अच्छी चीज देख रहा है, अच्छे काम करने जा रहा है, अच्छे लोगों से जुड़ रहा है तो आप उसको रोकते हो। यह जो अच्छाई के प्रति रोकना है, सम्यग्ज्ञान, सम्यग्दर्शन के भावों के प्रति रोकना है। यह ज्ञानावरण दर्शनावरण के बंध का कारण है। अंतराय डालना, विघ्न उपस्थित करना।

आसादना भाव

फिर एक और भाव इसी से आगे बढ़ जाते हैं तो आसादना हो जाती है। आसादना में क्या होगा? अगर सामने वाला अगर कोई अच्छा ज्ञान दे रहा है। हितकारी ज्ञान दे रहा है और उसके प्रति हम जान भी रहे हैं कि इसका ज्ञान सम्यग्ज्ञान है लेकिन हम अपनी कषाय के कारण से उसके वचनों उसके लिए, अपने वचन से अपनी काय से उसकी हम आसादना करेंगे। कैसे करेंगे? वचन से तो हम बोल देंगे, कुछ नहीं जानता है? बिना वजह की बातें करता रहता है लेकिन फिर भी जो है बहुत ज्यादा लोगों को अपने मोह में बांध रखा है। हमने यह बोल दिया। यह क्या हो गया? उसकी हमने ज्ञान की आसाधना कर दी। ऐसी कुछ ज्ञानी-आनी नहीं होते हैं। सब देखा है मैंने। यह क्या हो गया? उसके ज्ञान की आसाधना कर दी, ऐसे वचन बोल करके अथवा काय से भी आसादना होती है। कोई अच्छा धर्म का सम्यग्ज्ञान का भाव दे रहा था और हमने जो है कोई दो लोग बैठे थे और हमने अपना मुँह इस तरीके से बनाया कि सामने वाले को ऐसा लगा कि यह जो है कुछ नहीं है। बना लेते ऐसा नहीं, ऐसी कोई चार लोग बैठे हैं और एक दूसरे को देखते रहते हैं और एक सामने वाला बखान कर रहा है। एक सामने वाले ने मुँह बनाया है। सुना है? ऐसे मुँह बनाया तो क्या हो गई? यह काय से आसादना हो गई है। काय और वचन इस तरह से हम उसके ज्ञान को जो सही है लेकिन फिर भी दूसरा इसकी ज्ञान में आ न जाए, इसके प्रभाव में आ न जाए, इसलिए हम उसके लिए उसकी आसादना करते हैं मतलब विराधना करते हैं। मतलब ज्ञान का हम घात करते हैं। यह भी जो है उस ज्ञानावरण दर्शनावरण कर्म के बंध का कारण बन जाता है।

यह अंतराय में आ जाएगा disturb कर देना, tape चलाना। कई बार ऐसा भी होता है, जिस समय पर बच्चों की पढ़ने का time हो, कोई घर का ही कोई व्यक्ति हो या पड़ोसी हो, उसी समय पर जो है, वह कुछ न कुछ ऐसा कर दे। चाहे टी.वी आवाज ज्यादा कर दे, tape ज्यादा आवाज में चला दे। ताकि यह बच्चे पढ़ न पाए। ऐसे ही भाव रहते हैं तो वह करते तो सब होशियारी के साथ हैं। लेकिन उससे जो कर्म का बंध होता है, वह कर्म का बंध भी फिर बाद में आपको जब फल में आएगा तो फिर आपकी सब होशियारी भुला देगा। फिर कुछ भी भाव नहीं रहेगा होशियारी करने का। वह उस समय पर बिल्कुल ऐसा अज्ञानी बना

देगा। इस तरह के कर्मों के ही यह फल होते हैं जो हम देखते हैं बच्चों का मानसिक विकास नहीं हो रहा। किसी समय के अनुसार बच्चों में जो ज्ञान आना चाहिए वह नहीं होता। वह भी उनके इस तरह के ज्ञानावरण कर्म के बंध के कारण से होता है। जो ऐसे बच्चे आपको देखने को मिलते हैं, बचपन से बड़े होकर के भी इन्हीं कर्मों के फल से होता है। यह बहुत अच्छे प्रसंग है इन्हें हर व्यक्ति को समझना चाहिए और इस पर अपने मन के भावों पर अंकुश लगाने का पूरा प्रयास करना चाहिए। ताकि हम ऐसे कर्मों के बंध से अपने आपको बचा पाए।

उपघात भाव

अंत में एक आ जाता है- उपघात। उपघात का मतलब होता है, अब तो हमने उसके ज्ञान को घात करने का ही भाव बना लिया ।

Class 12

इसका ज्ञान मिट ही जाए। इस तरीके का या तो हमने भाव किया या हमने मुँह से बोल दिया या मन में हम सोचते रहे कि यह कब मिटेगा। इसका ज्ञान कब जो है, नष्ट होगा या अब इसके लिए यह सब चीजें जो नष्ट होगी ताकि इसका ऐसा जो है हमारे सामने बोलना या इसका ज्ञान देना हमारे सामने रुक पाए। यह क्या हो गया? उपघात हो गया और ज्यादा आगे बढ़ गया। मतलब कि आसाधना में तो वचन से काय से रहा और उपघात में मन से उसने जो है उस तरीके का भाव कर लिया कि इसका ज्ञान ही नष्ट हो जाए। यह बिल्कुल जो है अज्ञानी हो जाए। जैसे हम कभी-कभी गुस्से में बोल देते हैं, तेरा सत्यानाश हो जाए! उसी तरीके से इसका ज्ञान ही पूरा नष्ट हो जाए ऐसा भाव करना ताकि जो है, इसके ज्ञान के कारण से जो मुझे पीड़ा हो रही है वह न हो। यह भी एक बड़ी चीज है ज्ञानियों की ज्ञान से भी लोगों को पीड़ा होती है। लोग ज्ञानियों के ज्ञान का भी घात भी करने का भाव रखते हैं तभी उनके लिए इस तरह से भाव या लिखे गए हैं जिससे ऐसी कर्मों के आस्रव और बंध भी होते हैं, यह बहुत अच्छे सूत्र हैं। जिन्हें हमें ध्यान में रखना है एक सूत्र फिर और आगे बढ़ते हैं। जो असाता वेदनीय कर्म के बंध के लिए कारण बताया जा रहा है।

दु:ख-शोक तापा-क्रन्दन-वध-परिदेव-नान्यात्म-परोभय-स्थानान्य सद्वेद्यस्य” ll 6.11 ll

असाता वेदनीय कर्म के आस्रव के लिए यह भाव कारण है। सबसे पहले लिखा है- दुःख। दुःख का मतलब होता है, जिससे कि हमारे भीतर एक पीड़ा बनी रहे। पीड़ा का परिणाम! पीड़ा है किस कारण से है? कभी-कभी तो कारण पता होता है, इस कारण से वह कभी-कभी पता भी नहीं होता फिर भी पीड़ा है। कहाँ? सिर में नहीं, मन में, सिर की पीड़ा तो किसी कारण से होगी लेकिन मन में पीड़ा होना अच्छा नहीं है, मन

में दुःख का भाव है। यह दुःख का भाव आपके अन्दर असाता वेदनीय कर्म का बंध करा रहा है, आस्रव करा रहा है। इसे रोको Just stop मतलब यह थेरेपी आपको खुद अपने अंदर करनी है। अगर आप किसी भी चीज को लेकर के भीतर से परेशान होते हैं, दुःखी होते हैं। उस समय आप यह महसूस करें कि यह हम अपने लिए आगे और दुःख बो रहे हैं क्योंकि जो अभी हम आसाता वेदनीय कर्म का आस्रव कर रहे हैं। आगे फिर हमें यह दुःख देने वाला है। इसका भी फल मिलेगा। दुःख का भाव पीड़ा का भाव कुछ सकारण भी होता है और कभी-कभी केवल कुछ नहीं भी है तो भी कुछ अपने अनुकूल नहीं हुआ या कुछ भी जो है बाहरी वातावरण अपने विपरीत थोड़ा सा हुआ या कुछ थोड़ी देर के लिए कोई कुछ अकस्मात कोई आपत्ति आ गई या कोई कुछ कह गया। हम जो है बहुत देर तक दुःख के परिणाम में बने रहे यह कहलाता है- दुःख का भाव। असाता वेदनीय का आस्रव करा रहा है। अब इससे कौन बचाए?

कभी-कभी तो आदमी अपना दुःख कह देता है, जब ज्यादा हो जाता है। लेकिन कभी-कभी तो कहता भी नहीं है। भीतर-भीतर बना रहता है, सुखी भी देखता नहीं है और दुःख का मतलब क्या है? या दुःख का कारण क्या है? वह भी बता नहीं पाता, वह व्यक्ति उसके अंदर उस दुःख का जो कारण है, उसके अंदर खुद उसी के कर्म का अपना उदय भी है और उसी के माध्यम से पुनः उसको बंध का कारण भी बन रहा है। अगर वह समझदार हो तो वह समझदारी से काम ले सके कि हमें बेवजह दुःखी होने की कोई जरूरत नहीं है और अपने परिणाम अपने विचारों से चलते हैं, हम अपने विचारों को बदलें। हम अपने आप को थोड़ा सा परिवर्तित करें जैसे हम अपने विचारों को थोड़ा सा change करेंगे और दुनिया में रह कर के भी दुनिया की बातों से कोई ज्यादा मतलब नहीं रखेंगे तो ही हम अपने भीतर के दुःख को थोड़ा सा रोक पाएँगे। यह हमें खुद ही करना होगा, यही सोच कर कि मेरा दुःख कितना कम है, उनका दुःख कितना ज्यादा है? यह भी एक तरीका है समझने का समझाने का अपने मन को। अगर हम उसी समय पर अगर दुःख का comparison करने लग जाए तो भी हमारा दुःख कम हो जाता है। यह भी एक मतलब mental therapy है। यह इसका भी use करें जब आपको दुःख होता है हमें किस बात दुःख का तो इतना सब कुछ होते हुए भी हम दुःखी हो रहे हैं। हमें अपनी किसी भी तरह की कोई भी चीज का दुःख हो रहा है तो हम यह समझे हैं कि यह सब चीजें हैं, हमारे लिए अनित्य हैं। हम से भी ज्यादा दुःखी दुनिया में दूसरे लोग हैं। हम अपने आप को दुःखी करके क्यों असाता वेदनीय कर्म का उदय करें जो कर्म के उदय में होना है, हो जाएगा, हम खुश हैं। इसके अलावा कोई तरीका नहीं है। भीतर से इस आस्रव को रोकने का और जो तरीका है, वह अगले सूत्र में आएगा कि आपको गौर करना है अच्छा!,ठीक है ! दुःख भी होता है, शोक भी होता है। शोक मतलब कोई अपना इष्ट था मतलब अपना close relative था या कोई अच्छा fast friend था या कोई अपने लिए बहुत ही मन को अच्छे लगने वाली कोई भी, वह अपने से चली गई। अपने से उसका वियोग हो गया, अभाव हो गया तो उस समय पर एक शौक पैदा हो जाता है, कोई अपने साथ रहा अब छोड़ कर चला गया तो क्या हो गया? अब उसके प्रति एक जो भीतर ही भीतर शोक का भाव रहेगा। वो

कह नहीं पाएगा लेकिन शोक रहेगा। शोक भी क्या करेगा? इस दुःख से बढ़कर के हैं थोड़ा सा। सामान्य दुःख उससे बढ़कर के है। यह भी और ज्यादा असाता वेदनीय कर्म का आस्रव है। ऐसा होता है। घर में अगर दो दिन के लिए भी कोई रिश्तेदार आ जाता है और अगर ज्यादा प्रिय होता है और फिर चला जाता है तो थोड़ी देर एक घंटे या एक दिन तो आप कल शोक में भी जाता है। बेटी आती है बहू आती है, चली जाती है। कहीं हमेशा के लिए छोड़ कर चली गई तो फिर हमेशा के लिए शौक हो जाता है। शोक के तरीके हैं जो हमारा इष्ट है, जो अपने से चला गया दूर हो गया तो वह शोक का भाव हमारे लिए दुःख पैदा करता है। अरे! अभी तो आप संसार की बातें कर रहे हो। ऐसा भी शोक होता है, किसी का कोई पुत्र था कोई accident हो गया कुछ हो गया तो। यह सब भी जो है उसके लंबे समय के लिए शोक का कारण बन जाता है। इसमें बचाना पड़ता है। अगर हम लंबे समय तक उसी शोक में पड़े रहेंगे तो वह हमारे लिए लंबे समय तक असाता वेदनीय कर्म का आस्रव कराता रहेगा। मतलब हमें दुःख आगे मिलने वाला है, इससे हम सुखी नहीं होंगे। इससे और ज्यादा दुःखी हो कर के हम और ज्यादा रोगी हो जाएँगे। खुद अपने आप को खुद हम जो है दुःख में डाल रहे हैं। इस तरह का यह शोक भाव भी असाता वेदनीय है।

फिर ताप भाव है। ताप का मतलब होता है जैसे किसी ने कुछ आपसे कह दिया यह बड़ा भाव है। वह कुछ न कुछ कह ही देता है सबके पास मुँह है और हमारे पास कान है। उसके पास उसकी जबान है, हम किसी के मुँह के ऊपर उंगली तो रख नहीं सकते। कोई कुछ भी कह ही दिया और अपने को भीतर से एकदम से क्या हो गया? मन का temperature बढ़ गया। ताप! ताप मतलब है, भीतर से जो है आग सी लग गई, परेशानी सी पैदा हो गई। अब जो है वह ताप जब तक चलेगा तब तक असाता वेदनीय का आस्रव चल रहा है। क्या करें कुछ कर भी नहीं सकोगे, कभी-कभी तो ऐसा भी हो जाता है कि एकदम से ठंडा भी नहीं होता। अगर किसी ने कोई मान लो थोड़ा सा कोई अपमानजनक बात कह दी तब तो और ज्यादा दुःखी कर जाते हैं। अगर किसी ने कोई अपनी कहीं insult कर दी, कोई अपने बारे में कहीं किसी कोई गलत message कर दिया, किसी तरीके का अपवाद कर दिया तो और ज्यादा लंबा ताप हो जाता है। नींद उड़ जाती है तो यह ताप के कारण से नींद ही उड़ जाती है। नींद नहीं आएगी आपको ताप के कारण से, नींद नहीं आएगी। नींद में भी साता चाहिए पड़ती है, सिद्धांतः। असाता वेदनीय कर्म ज्यादा होगा तो आपको नींद नहीं आएगी। इस तरीके से बढ़ जाता है और फिर जब यह और जब रह न पाए भीतर तो आक्रंदन का रूप ले लेता है।

आक्रंदन

आक्रंदन मतलब अब हम जो है थोड़ा सा रोना-चिल्लाना भी शुरू कर देते हैं। आक्रंदन का भाव मतलब रोने का भाव। अब हम दुःखी हो रहे हैं। आँसू झलका रहे हैं। बार-बार कोई कुछ पूछता है, एकदम से फफक जाते हैं मतलब रो पड़ते हैं और फिर जो है पूरी कहानी उसको सुना डालते हैं और दूसरा उसको पूरी कहानी

सुना डाली रो रो कर के। ऐसे ही करते-करते लोग अपना time निकालते हैं। यह भी क्या है? कोई तुम्हारे को क्या रोक लेगा? सब आएँगे, सब देखेंगे, सब सुनेंगे सब इठला के चले जाएँगे। कोई किसी के दुःख को रोक नहीं सकता। आप ही अपने दुःख को रोक सकते हो। यह आपको सूत्र बता रहे हैं। आक्रंदन का भाव भी जो है क्या करता है? क्या करता है? रोना, आँखों में आँसू आ जाना, बार-बार आँखें बिल्कुल झलक आना तो आँखों पर आँसू रखे रहते हैं, भगवान जाने कितने ज्यादा है। कुछ भी उनसे कुछ कहा नहीं कि छलके नहीं, ऐसे जो लोग ज्यादा emotional होते हैं। यह ज्यादा भीतर से दुःखी भी हो जाते हैं। एक बहुत अच्छा कवि रहीम का एक दोहा है प्रासंगिक है-

रहिमन निज मन की व्यथा, मन ही राखो गोय, सुन इठले लोग सब बांट न ले है कोय।

इतनी अच्छी बात है। वह इसी के लिए तो है व्यथा तो सबके मन में होती है। दुःख सबके मन में होता है, लेकिन अगर आप उसे रो करके दूसरों को बता रहे हैं तो कौन तुम्हारे दुःख को बाँटने आ रहा है। सब सुन कर के चले जाएँगे, हाँ! हाँ! हाँ! हाँ! ऐसे करके निकल जाएँगे। क्या होने वाला? रहिमन निज मन की व्यथा मन ही राखो कोय लेकिन मन में रहती नहीं है। मन में तब रखनी पड़ती है, जब हम उस को सहन कर पाए इसलिए आदमी कहता भैया जो अपने मन में है, पहले बता दो, निकाल दो ताकि थोड़ा हल्का तो हो जाए। यह मन में रखने वाले लोगों का मन भी तो बड़ा strong होना चाहिए तब मन में रख पाए। कुछ सुन इठले लोग सब बाँट न ले कोई तो कोई बांटने वाला नहीं होता दुःख-दर्द किसी का हम समझे,

वध अगर किसी का हम इस तरीके से कोई भी प्राणों का वियोग कर देते हैं या घात कर देते हैं या किसी की हिंसा कर देते हैं, किसी के हाथ पैर काट कर देते हैं। किसी के मुंह पर इतना तेज एक तमाचा मारा कि उसके दांत ही निकल पड़े या उसका जो है कान का पर्दा ही चला गया तो यह सब भी वध ही हो जाता है। यह सब क्या है? असाता वेदनी के आस्रव का कारण है। दाँत नहीं निकलते ? अरे अभी आपने खाया नहीं मतलब! दाँत तो ठीक है आदमी बेहोश तक पढ़ जाता है दाँत भी निकल आते हैं।

परिदेवन

अब आता है- परिदेवन। मतलब अब हम रो भी रहे हैं और चिल्ला भी रहे। हाय हाय हाय करके जैसे कभी आपने देखा हो पुराने जमाने में जब लड़कियों के विवाह होते तो पूरा जैसे मोहल्ला का रोना जरूरी है मतलब वह बिल्कुल आवश्यक पेपर है, वह उसके बिना तो बेटी की विदाई होती नहीं। यह भी नहीं पता पड़ता है कि वह मर गया इसलिए रो रहा है या कोई जा रहा है इसलिए रो रहे हैं। इसलिए इस तरीके का आक्रंदन पूरा मोहल्ला जाग जाये तो इसको आक्रंदन बोलते हैं। अब तो नहीं होता कुछ भी कौन रोता है? फिर भी होता है ये आक्रंदन जो हम दूसरों को रुलाने के लिए करते हैं ताकि हम रोएँगे तो वह भी रोएगा। उद्देश्य क्या रहता है? अब लड़कियाँ नहीं रोती तो माता-पिता क्या रोएँगे? भाई क्या रोएगा? पहले वह

रोती थी, इसलिए वे रोते थे। सामने वाले का दिल भर आता था। कोई भी अड़ोस-पड़ोस का भी होगा तो भी रोने लग जाता था। यह आक्रंदन का भाव, इसलिए लिखा है- स्वात्म , परात्म और उभय यह तीनों के लिए असाता वेदनीय का अवसर पर कारण बन जाता है। स्वात्म मतलब अगर हम अपने लिए कर रहे हैं तो कभी-कभी कोई भाव अपने लिए या असाता का कारण बनता है। कोई-कोई हमारा किया हुआ भाव दूसरे के लिए असाता का कारण बनता है। हम अगर किसी तरीके से पीड़ित है न, दुःखी हैं हम सामने वाले को बार-बार वही तो बता रहे हैं, वह भी दुःखी हो रहा है। तुम उसको भी दुःख पैदा कर रहा है, वह उसके लिए कर रहा है या कभी हम अपने लिए न करके केवल उसी को दुःखी बनाने के लिए करें तो वह दूसरे के लिए परात्म कहलायेगा और कभी-कभी स्व और पर दोनों के लिए होता है तो वह उभय रुप कहलाता है। इसलिए लिखा है- स्वात्म, परात्म और उभयात्म यह तीनों प्रकार से जो है असाता वेदनीय कर्म का आस्रव और बंध इस तरह से होता है। जो इस तरह से कर रहा होता है तो वह या तो अपने लिए या दूसरे के लिए या दोनों के लिए करता है। इसलिए आप देखेंगे कि इन भावों से तीनों प्रकार की परिणतियाँ बनती हैं। दुःख या तो केवल अपने तक रहेगा या दूसरे तक दुःखी करने के लिए हम करेंगे या दोनों भी उस से दुःखी हो जाएँगे तो इस तरह से यह असाता वेदनीय के आस्रव का स्वरूप बताया।

आगे का बाद में बताया जाएगा।